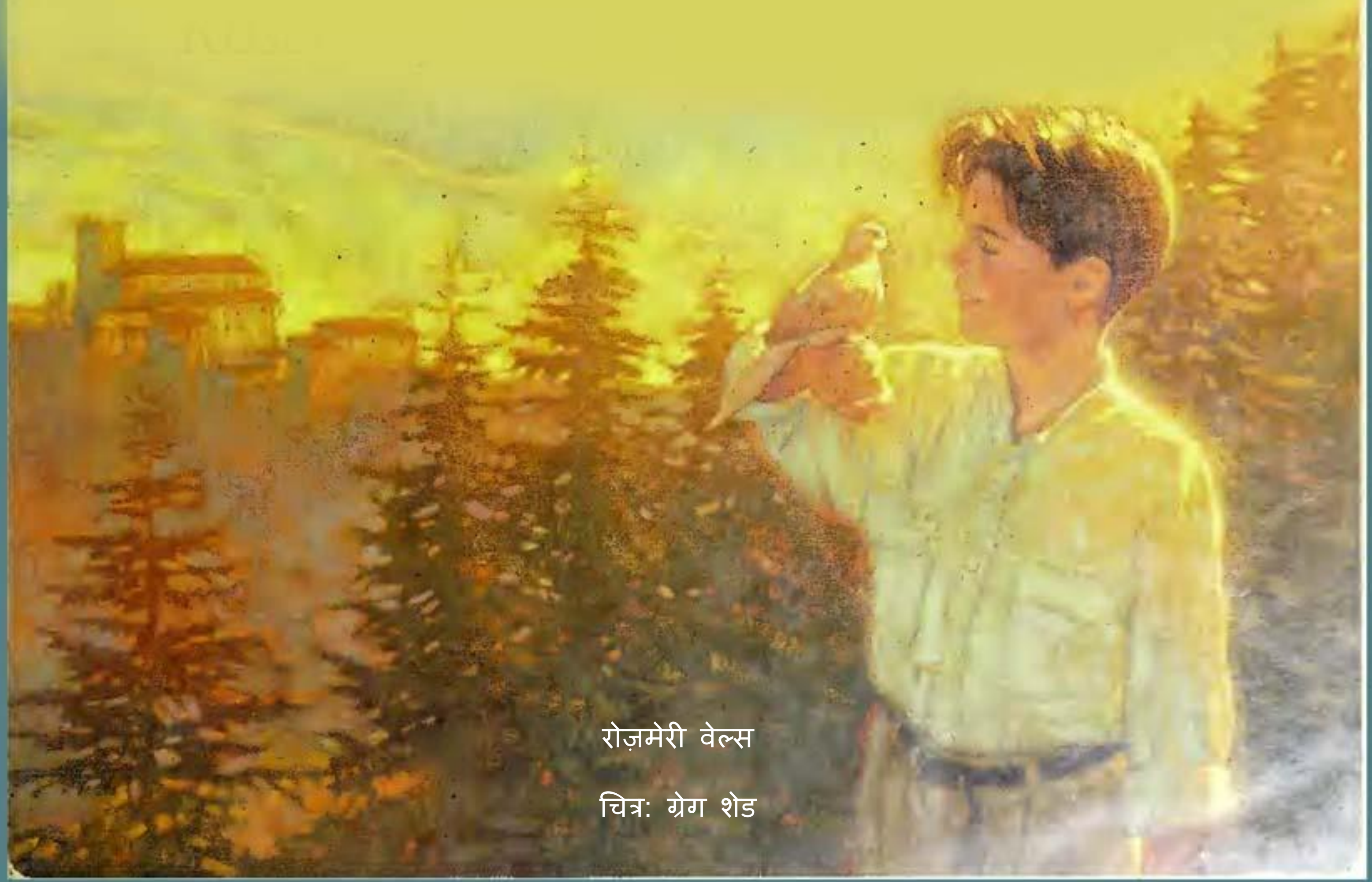
कबूतरों की भाषा



रोज़मेरी वेल्स

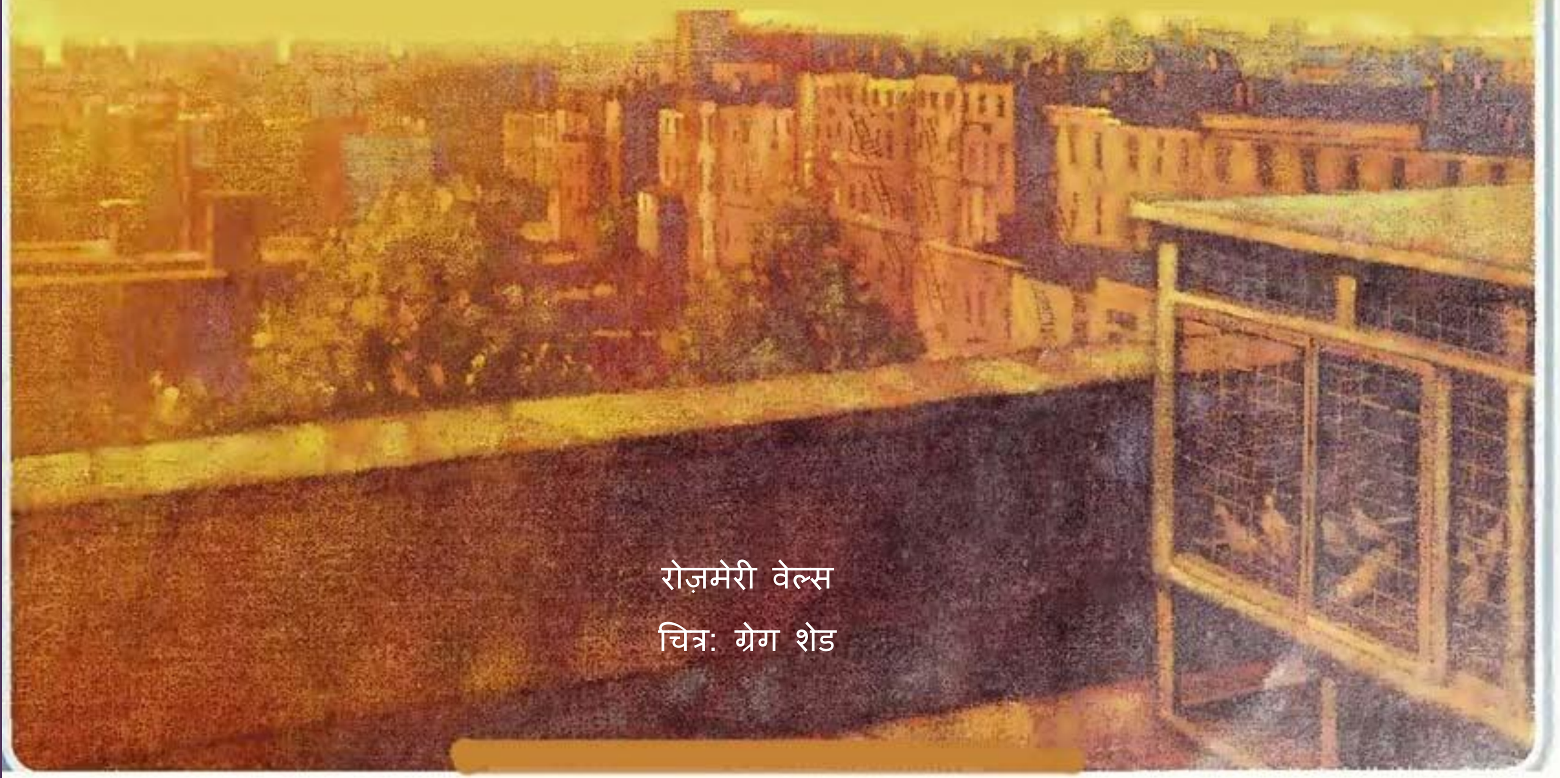
चित्र: ग्रेग शेड

जूलियट के छठे जन्मदिन पर दादाजी उसे दो उपहार देते हैं. उसमें एक ब्रुकलिन छत की मचान से एक कबूतर है; दूसरा उपहार महान युद्ध की कहानी है.

केवल नौ साल के एक अनाथ लड़के के रूप में, दादाजी ने इतालवी सेना में लड़ाई लड़ी थी. दादाजी उन कबूतरों की देखभाल करते थे जो दुश्मन की गोलाबारी के बीच से होकर गुप्त संदेश पहुंचाते थे, और उन पुराने दिनों का एक कबूतर उनकी याद में आज भी जीवित था.

जूलियट ने अपने दादा की कहानी में वर्णित पक्षी के नाम पर अपने जन्मदिन के कबूतर का नाम भी "इसाबेला" रखा. दादाजी ने कहा कि इसाबेला के घर जाने से पहले जूलियट को कबूतरों की भाषा सीखनी होगी, लेकिन वो कैसे संभव होगा?

कबूतरों की भाषा



रोज़मेरी वेल्स
चित्र: ग्रेग शेड

लेखक का नोट

हजारों वर्षों से लोग हवा के माध्यम से संदेश भेजने के लिए घरेलू कबूतरों का उपयोग करते आए हैं. पहले विश्व युद्ध में विशेषकर कबूतरों की वीरता की कहानियाँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं. दुश्मन सैनिकों के लिए लगभग अदृश्य, पक्षी छोटे कोडित संदेशों के वफादार वाहक थे जो सैनिकों को किसी भी आपात स्थिति या रहस्यों के बारे में सचेत करते थे. पंख वाले नायकों ने दोनों तरफ के सैनिकों और नाविकों की जान बचाई. पक्षियों को सम्मान पदक और एक देश द्वारा सर्वोच्च सैन्य सम्मान भी दिया गया. आज भी उन्हें उन कई देशों की सशस्त्र सेनाओं द्वारा याद किया जाता है जिनके जवान उस भयानक युद्ध में लड़े थे.

मैं अब दादाजी और खुदको, उनकी ब्रुकलिन वाली छत पर बैठे हुए देख सकती हूँ. यह मेरा छठा जन्मदिन है हम केप, न्यू-जर्सी से दादाजी के कबूतरों के घर आने का इंतजार कर रहे हैं. आज सुबह उन्हें रेसिंग कबूतरों के अन्य झुंडों के साथ ट्रक द्वारा वहां ले जाया गया था. मेरे दादाजी आकाश को देखते हैं, "मैं हमेशा कबूतरों की भाषा बोलता हूं, जूलियट," उन्हें कहना पसंद है.

दादाजी ने महान ओपेरा के नाम पर अपने कबूतरों के नाम रखे: मार्सेलिना, ओटाविये, एल्विरा, अल्फ्रेडो. इससे पहले कि मैं बोल पाती, मैं उन नामों को जान गई थी.





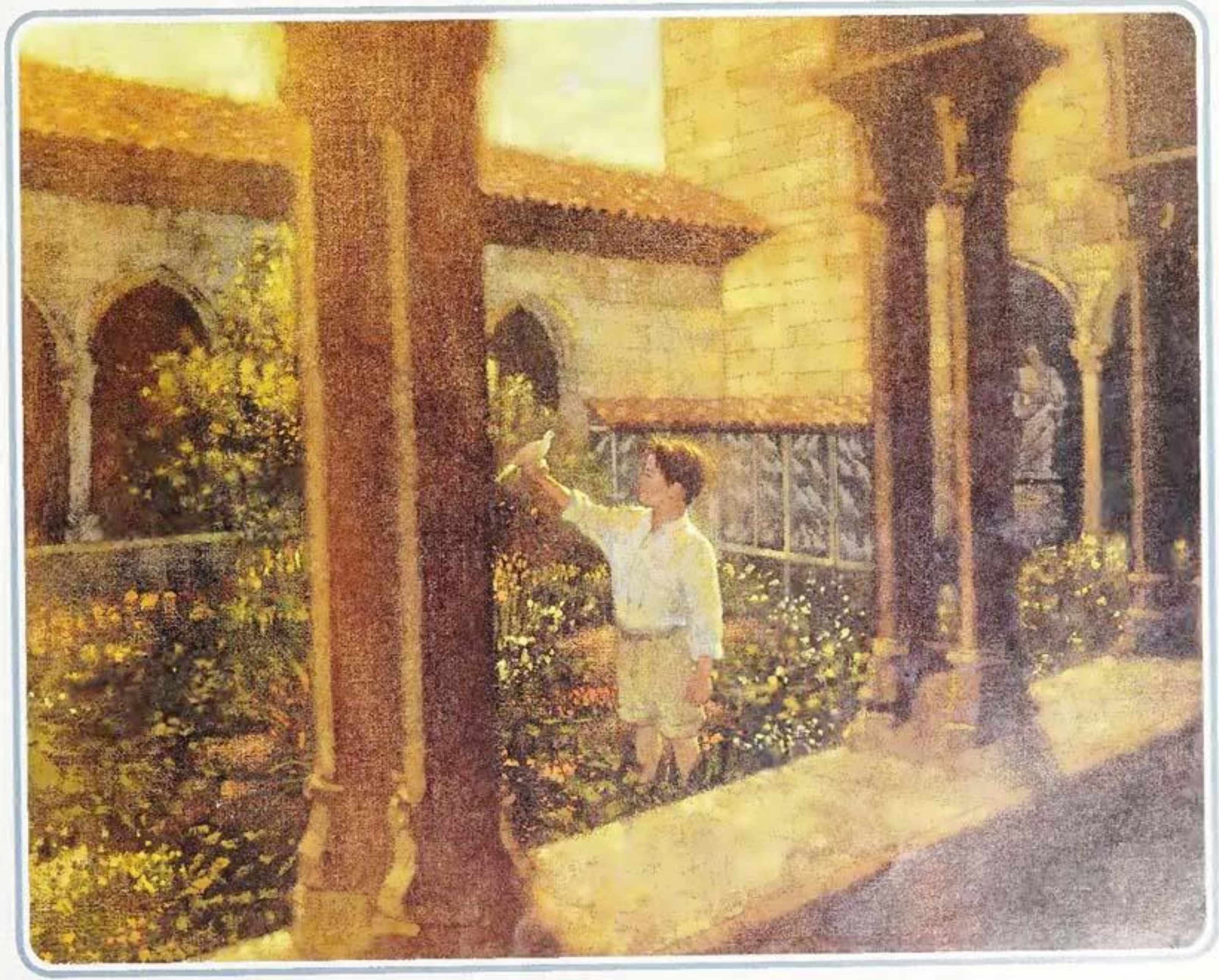
आज दादाजी ने मुझे जन्मदिन पर एक कबूतर भेंट किया. वो कबूतर अभी दूसरों के साथ उड़ने के लिए बहुत छोटा है. वो गुलाबी भूरे रंग की है, और उस पर कोको भूरे रंग की परत है. ऐसे पंखों के रंग वाले कबूतर को "इसाबेला" बुलाया जाता है, दादाजी ने मुझे बताया. "मैं भी उसे इसी नाम से बुलाऊंगी," मैंने दादाजी से कहा.

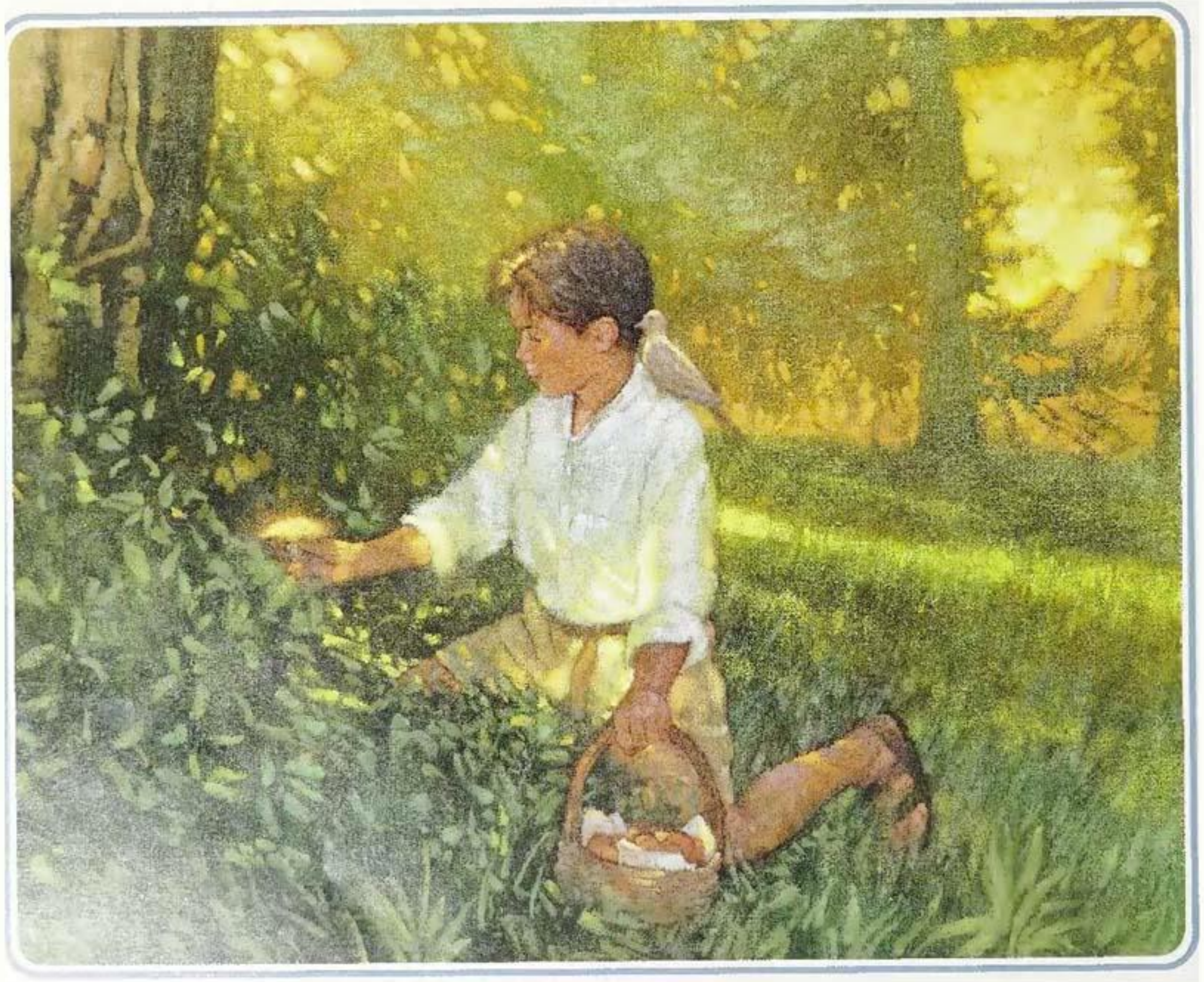
दादाजी ब्रुकलिन आकाश के किनारे से कुछ नाराज़ हुए क्योंकि वो न्यू जर्सी के आकाश से जुड़ता था. "आज मैं तुम्हें एक अन्य इसाबेला के बारे में बताऊंगा," उन्होंने मुझसे कहा, "यह इटली में, बहुत पहले और बहुत दूर की बात है."

फिर अपने छठे जन्मदिन पर मैंने पहली बार दादाजी की यह कहानी सुनी.

मेरा कोई माँ या पिता नहीं था. मेरा पालन-पोषण फ्रांसिस्कन ब्रदर्स द्वारा एक मठ में अन्य अनाथ लड़कों के साथ हुआ. मुझे लड़ना पसंद नहीं था, इसलिए मैं छत के बगीचे में अकेला रहता था. उस बगीचे में जैतून और अंजीर के पेड़ और सैकड़ों साल पुरानी सेंट फ्रांसिस की एक मूर्ति थी. वहाँ लाल टाइल की छतों के नीचे एक कबूतरखाना था, जो पहाड़ी हवा के लिए खुला हुआ था.

जब मैं भी तुम्हारे तरह छह साल का था, तब मैंने पक्षियों की देखभाल करना सीखा. फिर मैं उनकी भाषा बोलने लगा. जब मैं सात साल का हुआ, तो मुझे झुंड का प्रभारी नियुक्त किया गया. वहाँ अस्सी पक्षी थे. मैं उन सभी को उनके नाम से जानता था, लेकिन मेरी पसंदीदा, बारिश के बादलों के रंग वाली एक मादा थी. बेशक, मैंने उसका नाम इसाबेला रखा. फ्रांसिस्कन ब्रदर्स उसे "मैड्रिना" कहते थे, जिसका अर्थ होता है "गॉडमदर". वो मेरे लिए बिल्कुल एक माँ जैसी ही थी.

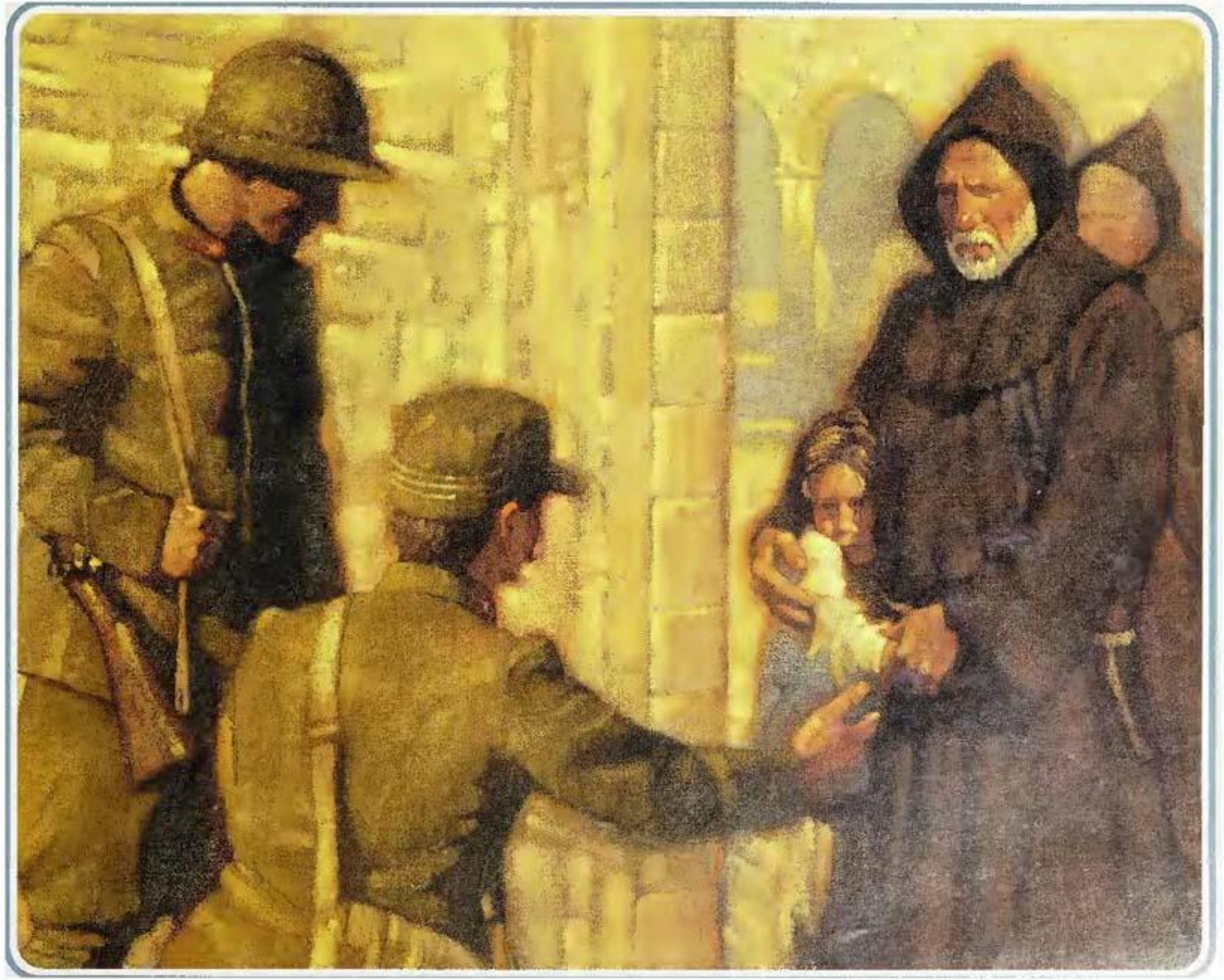




गर्मियों में फ्रांसिस्कन ब्रदर्स ने मुझे मशरूम इकट्ठा करने के लिए पहाड़ी जंगल में भेज देते थे. कुछ पेड़ों के नीचे, खासकर हिरण पथ के किनारे उगने वाले सबसे नाजुक मशरूम उगते थे. इसाबेला, जो हमेशा मेरे कंधे पर बैठी रहती थी, मेरे छोटे-छोटे संदेश लिखने का इंतजार करती थी, ताकि मैं रसोइये को बता सकूं कि आज मुझे क्या मिला है. मैंने उसके पैर के चारों ओर कागज लपेटता और उसे वापस भेज देता ताकि रसोइए को पता चले कि उसे रात के खाने के लिए क्या तैयार करना है.

मैंने सोचा था कि यह शांत जीवन हमेशा रहेगा, लेकिन एक दिन महान युद्ध शुरू हो गया. उसके तुरंत बाद, सेना ने मठ पर धावा बोल दिया. उन्होंने सबसे बड़े लड़कों और सभी कबूतर छीन लिए.

अपनी इसाबेला के बिना मैं शोक में डूब गया और सात दिनों तक मैंने खाना नहीं खाया. लेकिन सौभाग्य से दो सैनिक वापिस लौटकर आये. उन्होंने कबूतरों के प्रभारी लड़के की मांग की, क्योंकि सार्जेंट उन कबूतरों के साथ कुछ नहीं कर पा रहा था. इस तरह, नौ साल की उम्र में, मुझे सेना में भर्ती कर लिया गया.



कोई भी मुझे यह नहीं बता सका कि आल्प्स में इटालियंस, ऑस्ट्रियाई सेना से क्यों लड़ रहे थे. मुझे उसकी परवाह भी नहीं थी क्योंकि मैं किसी भी लड़ाई से बहुत दूर था, और कबूतरों और मेरे खाने के लिए भरपूर मात्रा में भोजन था.

एक दिन दो लेफ्टिनेंट मेरे कैप्टन के डेरे पर रुके. वे युद्ध में ले जाने के लिए तीन कबूतर चाहते थे. उन्होंने मेरे दो सबसे मजबूत कबूतरों, ब्रूनो और अल्बर्टो को चुना - फिर उन्होंने इसाबेला को चुना. मैंने गिड़गिड़ाया और रोया और मैंने उनसे कहा कि वो अभी अप्रशिक्षित है, वो कोई ख़ास अच्छी नहीं है. लेकिन उन्होंने कहा कि इसाबेला का रंग दुश्मन सैनिकों के लिए अदृश्य होगा, इसलिए वे उसे भी जबरदस्ती ले गए.

मुझे बहुत दिनों तक नहीं पता चला कि वहां पहाड़ों में क्या हुआ. लेकिन जब सैनिक वापस आये तब उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने क्या देखा.





युद्ध के पहले तीन दिनों में दो सौ सैनिक मारे गए. जब ऐसा हुआ, तो ब्रूनो के पैर पर मदद के लिए एक संदेश बाँधा गया, जिसमें बताया गया कि हमारी सेना कहाँ छिपी हुई थी. लेकिन ब्रूनो को ऑस्ट्रियाई लोगों ने गोली मार दी और वो संदेश दुश्मन के हाथ लग गया.

अगले सप्ताह में कई और सैनिक खो गये. जब ऐसा हुआ, तो अल्बर्टो के साथ मदद के लिए एक और संदेश भेजा गया. लेकिन ऑस्ट्रियाई लोगों ने कबूतरों को ढूंढने के लिए बाज़ों को प्रशिक्षित किया था. शायद अल्बर्टो को बीच हवा में ही पकड़ लिया गया, क्योंकि वो और उसका संदेश कभी नहीं मिले.



जब केवल एक दर्जन आदमी बचे तब, इसाबेला को हवा में छोड़ा गया. जब वो एक देवदार के पेड़ पर आराम कर रही थी तब एक ऑस्ट्रियाई निशानेबाज ने उसे गोली मार दी. वो स्तब्ध और लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़ी. निशानेबाज ने फिर गोली चलाई.

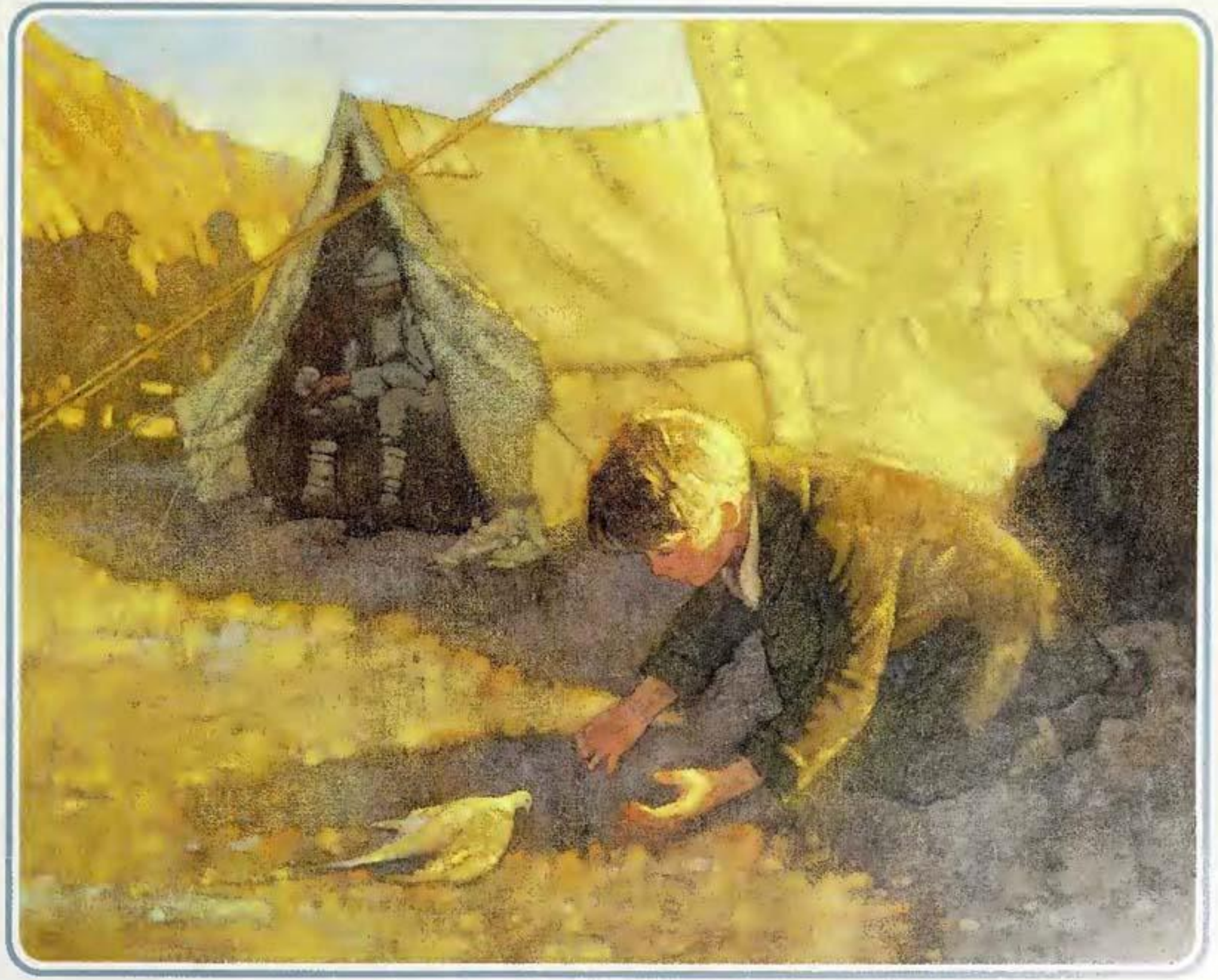
उस समय मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं था. मैं शिविर में प्रतीक्षा कर रहा था, और केवल अपने तीनों, पंखों वाले मित्रों के बारे में सोच रहा था. जिस स्थान पर मेरा दिल आमतौर पर धड़कता था वो एक खोखला स्थान था जहाँ ठंडी हवाएँ चलती थीं. रात भर मैं इसाबेला के पंखों की कोमल फड़फड़ाहट सुनने के लिए तनावग्रस्त रहा. दुनिया में अपने नौ वर्षों में, मैंने केवल इस छोटे बादल के रंग के पक्षी के प्यार को जाना था.

बारह दिन बारह महीनों के समान बीत गये. इसाबेला नहीं आई. मैंने सोचा था कि मैं बड़ा होकर एक ऐसा आदमी बनूंगा जो जीवनभर ऊपर आसमान की ओर देखूँगा, अगर वो दिन मुझे कभी मिला तो.

तभी सूर्यास्त के समय मुझे लगा कि मेरे तंबू के पास कीचड़ पार कर रहा कोई चूहा था. लेकिन वो चूहा नहीं था. वो इसाबेला थी जो बड़ी मुश्किल से पंख फैलाए हुए मेरी ओर चल रही थी. वो लगभग मर चुकी थी.

हमारे सैनिकों की लोकेशन यानि स्थिति बताने वाला संदेश अभी भी उसके पैर से चिपका हुआ था. उसकी बहादुरी के कारण, आठ आदमी जीवित रहे.

मैंने उसे साफ़ किया, खाना खिलाया और उसके घायल पंखों की मरम्मत की. फिर मैंने उसे अपने अंगरखे के अंदर छिपाकर रखा ताकि वो ठीक हो जाए और कोई उसे फिर कभी न ले जाए.



"इसाबेला अपने शेष वर्षों में मेरे कंधों पर आराम से बैठी रही," दादाजी ने मुझसे कहा, "लेकिन तुम्हें पता है कि वो एक प्रसिद्ध कबूतर था. युद्ध के अंत में इटालियन हाई कमान ने उसे बैंगनी रिबन से बंधे रजत पदक से सम्मानित किया."

दादाजी ने अपना बटुआ निकाला और मुझे एक पुरानी तस्वीर दिखाई, जो इतनी हल्की और भूरे रंग की थी, मैं मुश्किल से उस छोटे पक्षी को ढूंढ पाई. लेकिन वो वहाँ था, वो एक दुबले-पतले मुस्कुराते लड़के के कंधे पर बैठा था.



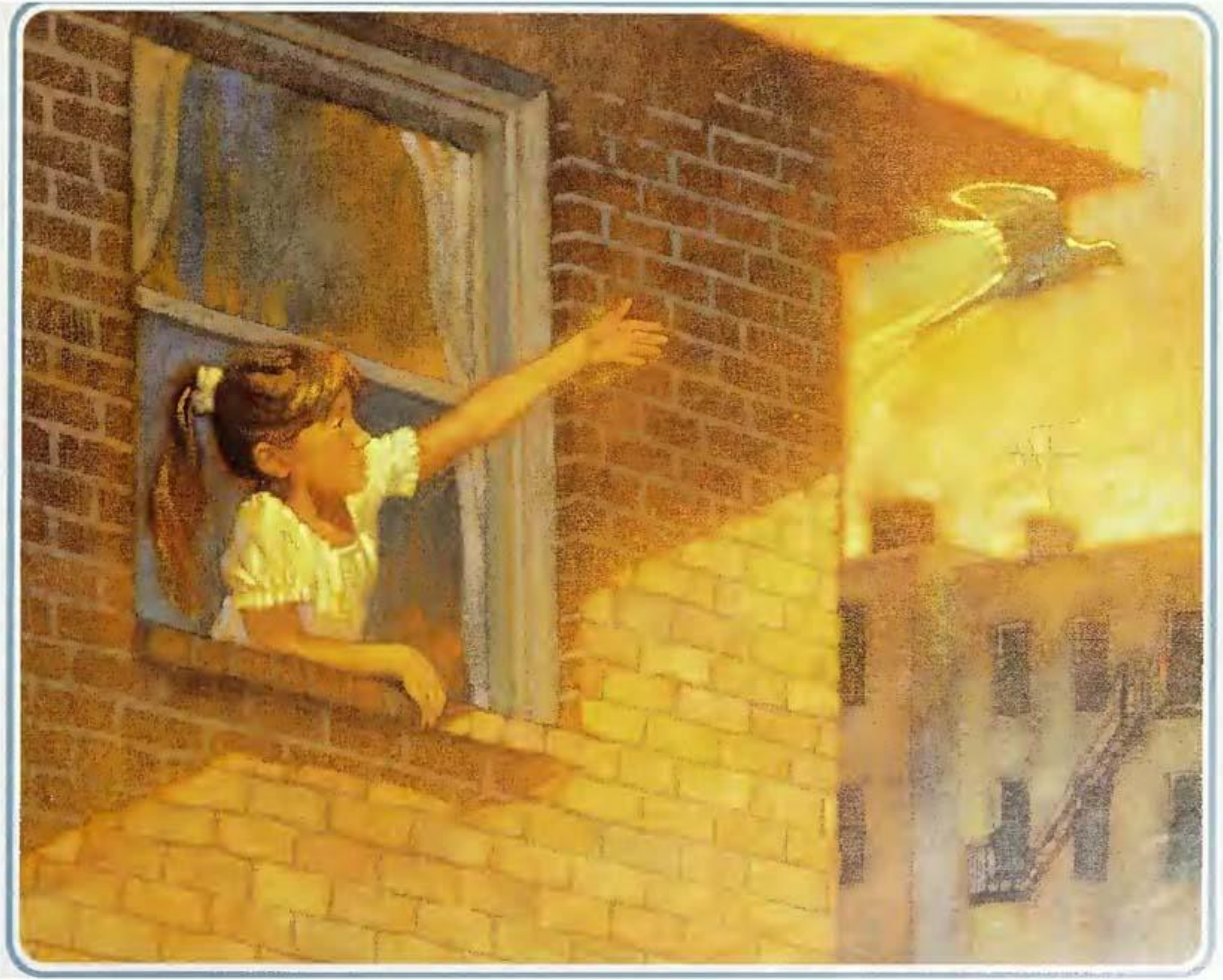


मेरी इसाबेला मेरे साथ क्वींस में फ़ॉरेस्ट हिल्स की मेट्रो से घर आती है. मैं उसे चिकन-तार वाली खिड़कियों वाले एक छोटे बक्से में लेकर जाती हूँ.

हर सोमवार सुबह स्कूल से ठीक पहले मैं इसाबेला को उड़ने देती हूँ. मैं उम्मीद करती हूँ कि वो मेरे पास वापस आ जाएगी, लेकिन उसकी बजाए वो तेजी से ब्रुकलिन में दादाजी के घर पहुंच गई. दादाजी के साथ मेरी रविवार की मुलाकात तक उसका वापस आना अब संभव नहीं लगता है.

"वो रास्ता कैसे पहचानती होगी?" मैंने दादाजी से पूछा.

उन्होंने मुझसे कहा, "कुछ लोग कहते हैं कि कबूतर चर्च की मीनारें याद कर लेते हैं. दूसरे कहते हैं कि पृथ्वी की चुंबकीय शक्तियां उनका मार्गदर्शन करती हैं. लेकिन मुझे पता है कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कबूतर गंध को सूंघ सकते हैं और उन गंधों को केवल पक्षी ही पहचान सकते हैं."



एक साल के बाद मैंने इसाबेला को अपने घर आने के लिए प्रशिक्षण देना छोड़ दिया. अपने दिल से, मेरी चिड़िया एक ब्रुकलिन की लड़की है, इसलिए जब मैं उसे सोमवार की सुबह रिहा करती हूं तो उसके पैर से जुड़े एल्यूमीनियम कैप्सूल में हमेशा दादाजी के लिए "आई लव यू" का सन्देश होता है.

मेरे नौ साल का होने से पहले रविवार को, दादाजी और मैंने छत पर जन्मदिन की पार्टी रखी.

"क्या आपको लगता है कि इसाबेला कभी मेरे पास आएगी, दादाजी?" मैंने पूछा.

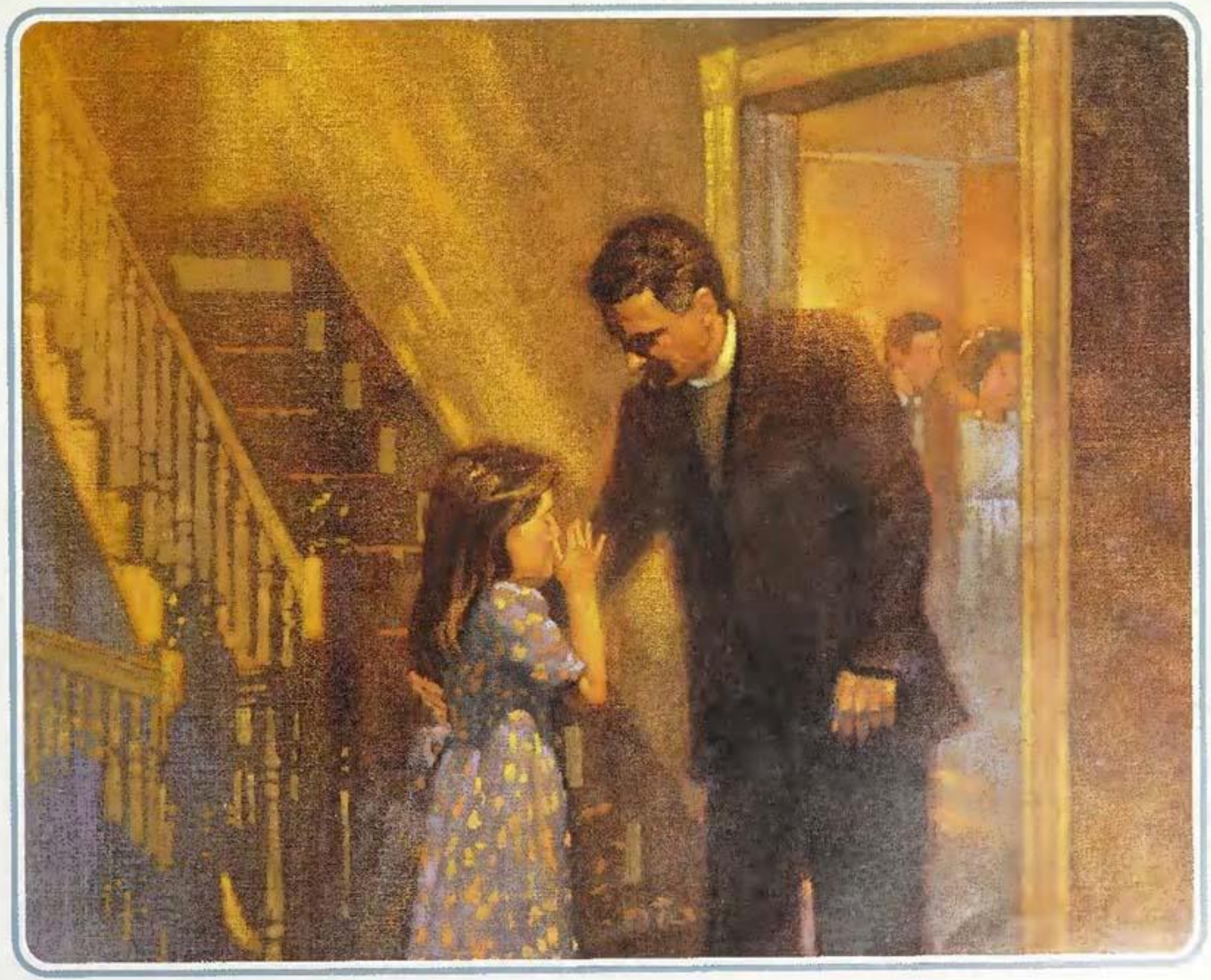
"ओह, हाँ," उन्होंने जवाब दिया. "अगर तुम कबूतरों की भाषा जानती हो तो."



मेरे जन्मदिन के एक सप्ताह बाद भोर के समय मेरा टेलीफोन बजा. जब मैंने अपनी माँ और पिता को रोते हुए सुना तो मुझे इस बात का अंदाज हो गया कि मेरे दादाजी की मृत्यु हो गई थी.

उस दिन मैं स्कूल न जाकर घर पर ही रही. मैंने केवल इसाबेला और दादाजी के साथ हमारे रविवारों के बारे में ही सोचा, जो पृथ्वी के किनारे पर सूरज की तरह गायब हो गए थे.

दादाजी की याद मे ब्रुकलिन चर्च में एक लंबी सेवा हुई और फिर दादाजी के घर में एक लंबा दोपहर का भोजन आयोजित हुआ. मुझे लोगों की बातें या फैंसी कपड़ों की सरसराहट सुनने में कोई रूचि नहीं थी. मैंने उस दिन अपनी चाची द्वारा लाए गए सौ व्यंजनों में से एक भी टुकड़ा नहीं चखा, न ही मैं पुजारी को नमस्ते कही. मैं छत पर घूमती रही और मैंने कबूतरखाने को खाली पाया.



सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए मैं घबराहट में अपने चाचा से चिल्लाकर पूछा, "कबूतर कहाँ हैं? मेरी इसाबेला कहाँ है?"

उत्तर मिला, "उन्हें प्रोविडेंस, रोड आइलैंड में एक कबूतर पालक को बेच दिया गया है."

उस रात मुझे नींद नहीं आई. मेरी माँ ने मुझे एक कहानी सुनाकर शांत करने की कोशिश की. मेरे पिता मेरे लिए एक गिलास गर्म दूध लाए. लेकिन अंततः वे भी बिस्तर में सो गए, और मुझे उत्तरी आकाश की ओर देखने के लिए छोड़ गए. मुझे अपने दादाजी के शब्द याद थे: "जिस स्थान पर मेरा दिल आमतौर पर धड़कता था वो एक खोखला स्थान था जहाँ ठंडी हवाएँ चलती थीं."

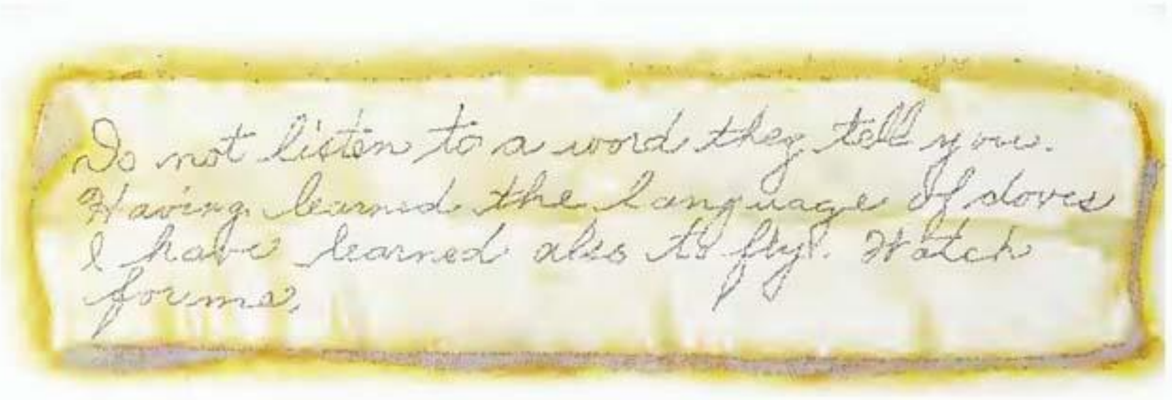
पाँच बजे मेरी आँख लगी, लेकिन छह बजे मेरी खिड़की पर कुछ खुजलाने की आवाज आई. वो इसाबेला ही है. वो पहली बार मेरे पास वापस आई थी. संभवतः उसने सबसे पहले दादाजी के ब्रुकलिन मचान को देखा होगा और उसे खाली पाया होगा. वो अपनी लंबी उड़ान से थक गई थी इसलिए मैंने उसे अपने तकिये पर बिठाया.



उसके पैर के चारों ओर मेरा एल्यूमीनियम संदेश कैप्सूल अभी भी बंधा हुआ था. ऐसा लगा जैसे दादाजी मेरा आखिरी "आई लव यू" संदेश पढ़ने से चूक गए थे. कैप्सल खोलने के बाद मुझे एक नया संदेश दिखाई दिया.

लेकिन वो मेरी लिखाई बिल्कुल नहीं थी. वो मेरे लिए दादाजी के पुराने ज़माने के हाथ का लिखा हुआ एक संदेश था:

"वे तुमसे जो भी कहें उनकी एक भी बात मत सुनना. कबूतरों की भाषा सीखने के बाद मैंने उड़ना भी सीख लिया है. अब देखना, मैं जरूर आऊँगा."


Do not listen to a word they tell you.
Having learned the language of doves
I have learned also to fly. Watch
for me.

और हां, इसाबेला और मैं हमेशा ऐसा ही करते हैं.

अंत